पर्यावरण जागरुकता : औपचारिक शिक्षा की भूमिका

✧ डॉ. योगीन्द्र

मानव एवं प्रकृति एक दूसरे के साथ अन्य सम्बन्ध से जुडे है । दोनों एक दूसरे से इस प्रकार जुड़े हुए हैं कि एक दूसरे के बिना नहीं रह सकते। हम सौरमंण्डल के अनोखे गृह पृथ्वी पर रहते हैं, क्योंकि इस ग्रह पर वे सभी सुविधायें प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है जो कि जीवन के लिए आवश्यक है–इस पर विद्यमान उचित तापक्रम, शुद्व जल की व्यापकता, समुचित भोजन व्यवस्था आदि। पृथ्वी पर बने इस प्रकार के पर्यावरण के कारण मनुष्य समेत सभी जीवो के अनुकूल परिस्थितियॉ उपलब्ध है । मनुष्य और पर्यावरण का बहुत गहरा सम्बन्ध है। मनुष्य प्रकृति की देन है वह प्रकृति की अनूकलता में पोषित हुआ एवं प्राकृतिक प्रतिकूल परिवेश से निरंतर संघर्ष करता रहा। पृथ्वी पर मनुष्य के जन्म के साथ ही उसकी आवश्यकताओं का भी जन्म हुआ । मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए पशुओं को मारकर खाया, जंगल काटे, खेती का विकास किया, रहने के लिए आवास की व्यवस्था की । धीरे –धीरे मनुष्य की आवश्यकताओं मे हथियार, कारखाने, ऊर्जा के संसाधन तथा यातायात के साधन इत्यादि सम्मिलित हो गये इस प्रकार से मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए पृथ्वी को नोचना–तोडना प्रारम्भ किया ।

प्रकृति और मानव का सम्बंध आदिकाल से है किन्तु मानव ने ही इस सम्बन्ध को तोडा है । प्रकृति अपने प्राकृतिक क्रिया–कलापों से वातावरण को स्वच्छ रखने का प्रयास करती है । लेकिन बढती हुई जनसंख्या के परिणामस्वरुप, विकासात्मक क्रियाऐं तथा ओद्यौगिकरण व तकनीकी से प्रदूषण की मात्रा में वृद्धि करके मनुष्य ने समस्या उत्पन्न कर ली। एक साधारण सी कहावत है कि किसी भी चीज की अति बुरी होती है। पर्यावरण कि भी निश्चित वहन क्षमता होती है।

रुसो के अनुसारः– ''प्रत्येक वस्तु प्रकृति के यहाँ से अच्छे रुप मे आती है केवल मनुष्य के सम्पर्क से ही वह दूषित हो जाती है ।''

पर्यावरण–पर्यावरण का हमारी शारीरिक संरचना स्वास्थ्य और मन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पडता है । पर्यावरण दो शब्दो से मिलकर बना है परि+आवरण। परि का अर्थ है चारों ओर से तथा आवरण का अर्थ है ढ़के हुए अर्थात चारो ओर से घेरने वाला या मनुष्यों जीवों व पेड़–पौधो आदि को घेरने वाला।

डगलस और हालेंड़–''पर्यावरण उन सभी बाहरी शक्तियों एवम् प्रभावो का वर्णन करता है जो प्राणी जगत के जीवन, स्वभाव, व्यवहार, विकास तथा परिपक्वता को प्रभावित करती है।''

पर्यावरण शिक्षा–''पर्यावरण शिक्षा वह शिक्षा है जो छात्रो को पर्यावरण से सम्बंधित समस्याओ के बारे में जागरुक बनाती है, समस्याओ को समझने, हल करने तथा अपने चारो तरफ के प्राकृतिक वातावरण को स्वच्छ बनाने के लिए प्रेरित करती है ।''

प्रदूषण के प्रमुख प्रकार–

1. वायु प्रदूषण 2. जल प्रदूषण
3. ध्वनि प्रदूषण 4. मिट्टी प्रदूषण

अपने स्वार्थो को सिद्ध करने के लिए हमने प्रकृति का जिस प्रकार से अंधाधुंध दोहन किया है और कर रहे हैं उसके अनेक घातक परिणाम हमारे सामने आये है जैसे–पृथ्वी पर पाये जाने वाले कई जीवो का अस्तित्व खत्म हो गया और अनेको जीवो का अस्तित्व खत्म होने के कगार पर है, मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। पर्यावरण प्रदूषण के निरन्तर बढने से कैंसर, टी.बी., एलर्जी आदि अनेक घातक रोग फैल रहे हैं और प्रतिवर्ष आक्सीजन का 10 प्रतिशत भाग नष्ट हो रहा है। जिससे मानव जीवन के लिए संकट पैदा हो रहा है। वैज्ञानिको का मत है कि पर्यावरण प्रदूषण के कारण तापमान में 1^0 से लेकर 3.5 ^{0} सेल्सियस तक कि वृद्धि के फलस्वरुप समुद्र का जलस्तर 25 सै.मी. ऊँचा उठ रहा है। जिसके कारण समुन्द्र तट पर बसे हुए कई भाहर जैसे मुम्बई, फ्लोरिडा (अमेरिका) पर्थ (आस्ट्रेलिया) नीदरलैंड आदि भाहरो के डूबने का संकट बढ गया है।

सूर्य की हानिकारक पैराबैंगनी किरणों से मानव जीवन की रक्षा करने वाली ओजोन परत भी पर्यावरण प्रदूषण से बच नहीं सकी। 1985 में दक्षिणी ध्रुव पर जो ओजोन छेद देखा गया था वह बढ़ता ही जा रहा है परिणामस्वरुप अनेक घातक बीमारियाँ (जैसे त्वचा कैंसर) फैल रही हैं। कृषि में रसायनो के अत्यधिक प्रयोग से उतरी अमेरिका मे 40 फीसदी कृषि योग्य भूमि मरुस्थल में तबदील हो चुकी है। औधोगिकरण के चलते दक्षिणी अमेरिका मे प्रतिवर्ष 5355 वर्ग मील वन्य खेत्र नष्ट हो रहा है।

पर्यावरण असतुलन के फलस्वरुप पैदा हुए जल प्रदूषण का यह परिणाम है कि मछली पकडने के लिए डीजल और पैट्रोल ट्रालरो के इस्तेमाल से न केवल हजारो मछलियो की प्रजातियां नष्ट हुई है बल्कि जीवित बची हुई मछलियों की भी जनन क्षमता कम हुई है।

शहरीकरण, ओद्योगीकरण तथा प्रकृति से छेड़छाड़ के कारण पृथ्वी का पर्यावरण संतुलन बहुत ज्यादा डगमगा गया है जिसके परिणाम स्वरुप–कहीं भूकंप, कही बाढ, कही सूखा, कही तूफान इसी का नतीजा है ।

पर्यावरण संतुलन बनाये रखने में औपचारिक शिक्षा का

योगदानः–पर्यावरण प्रदूषण की बढती समस्या के कारण विश्व का ध्यान इस ओर गया है। पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त करने के लिए आवश्यक है कि इसके सम्बंध में लोगों को शिक्षित किया जाए। इसके लिए औपचारिक शिक्षा सशक्त माध्यम बन सकती है । इसके द्वारा विद्यार्थियों मे चेतना उत्पन्न की जा सकती है। ताकि वे पर्यावरण को स्वच्छ रखने मे अपना सहयोग दे सके। जो निम्न प्रकार से है–

1. सभी शिक्षण संस्थाओ मे पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए ताकि विद्यार्थी इसके प्रति जागरुक हों।
2. सभी को अनिवार्य रुप से शिक्षा उपलब्ध कराना। यदि सभी मनुष्य शिक्षित होगे तो वे पर्यावरण के प्रति जागरुक होंगे।
3. पर्यावरण को बचाने के लिए जन चेतना अभियान चलाना आवश्यक है तथा इस अभियान की डोर विद्यार्थियो को थामनी चाहिए।
4. विद्यालय की पाठ्य–सहगामी क्रियाओं मे विद्यार्थियों मे विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम जैसे एन.एस.एस.,एन.सी.सी, नुक्कड नाटक, पत्र–पत्रिकाएँ, सेमिनार, पेटिग, पोस्टर, भाषण प्रतियोगिता, वाद–विवाद आदि के द्वारा पर्यावरण जागरुकता उत्पन्न करनी चाहिए ।
5. विद्यार्थियों को पैदल या साईकिल पर विद्यालय व अन्य स्थानों पर जाने हेतु प्रेरित करना चाहिए। जिससे पैट्रोल की बचत होगी, वही पर्यावरण को जहरीली गैसो से भी बचाया जा सकेगा ।
6. सरकार द्वारा पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी नए कानून बनाए जिनका कडाई से पालन किया जाए।उल्लंघन करने वालो को कड़े दंड व हर्जाने का प्रावधान होना चाहिए तथा इनकी जानकारी पाठ्य–पुस्तको के माध्यम से देनी चाहिए।
7. प्रत्येक व्यक्ति को इस प्रकार शिक्षित किया जाये कि वह वनो की कटाई रोके व नए–नए वृक्ष लगाये ।
8. उद्योगों व कारखानों की चिमनियाँ ऊँची होनी चाहिए।
9. शहरीकरण व सौन्दर्यीकरण के नाम पर वृक्षों के काटने पर प्रतिबंद्ध होना चाहिए।
10. कृषि मे रासायनिक खादों के अधिक प्रयोग करने से होने वाले दुष्प्रभावो के प्रति विद्यार्थियों को जागरुक करना चाहिए।
11. प्रत्येक छात्र को इस प्रकार शिक्षित किया जाये कि वे जान या समझ सके कि मानव का कल्याण प्रकृति से युद्ध करने मे नहीं बल्कि उससे सहयोग एवं सामंजस्य बनाये रखने मे निहित हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अम्बशत, आर. एस. (1944) पर्यावरण और प्रदूषण (इन्वायरमैंट एण्ड पाल्यूशनः एन इकोलोजिकल एप्रोच) लंका पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी।
2. भार्गव, जी. (1992) पाल्यूशन एण्ड इट्स कन्ट्रोल, आशीष पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली।
3. चन्दन, आर. सी. (1998) इन्वायरमैंटल अवेसरनेस, कल्याणी पब्लिशर नई दिल्ली।
4. दिर, एच. एम. (1981) इनवायरमैंटल पाल्यूशन, जानविली एण्ड सन्सज, न्यूयार्क।
5. डाउन टू अर्थ (साईंस एण्ड इनवायरमैंट फोर्थ राइटली मैग्जीन, मई 31, 2003.
6. जार्ज, जे. डब्ल्यू (1971) इनवायरमैंट रीडिंग फॉर टीचर्स, वरली पब्लिशिंग कम्पनी लन्दन।
7. मनीवसकम, एम. (1992) इनवायरमैंटल पॉल्यूशन, बुक ट्रस्ट इंडिया ।
8. साल्कर, के. आर. 1989 पॉल्यूशन एजुकेशन फॉर डेवलपिंग कन्ट्रीज, स्टरलिंग पब्लिशर्ज प्राईवेट लिमिटेड (लन्दन)।
9. यूनेस्को (1977) ट्रेंडस इन इनवायरमैंटल एजूकेशन।